।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

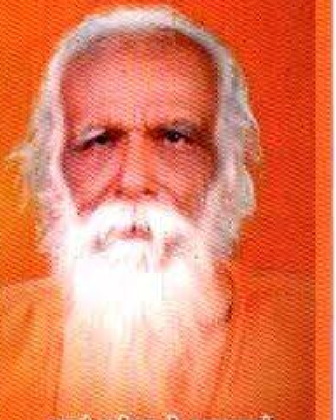

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १८ अंक ९ १० सितम्बर २०१८

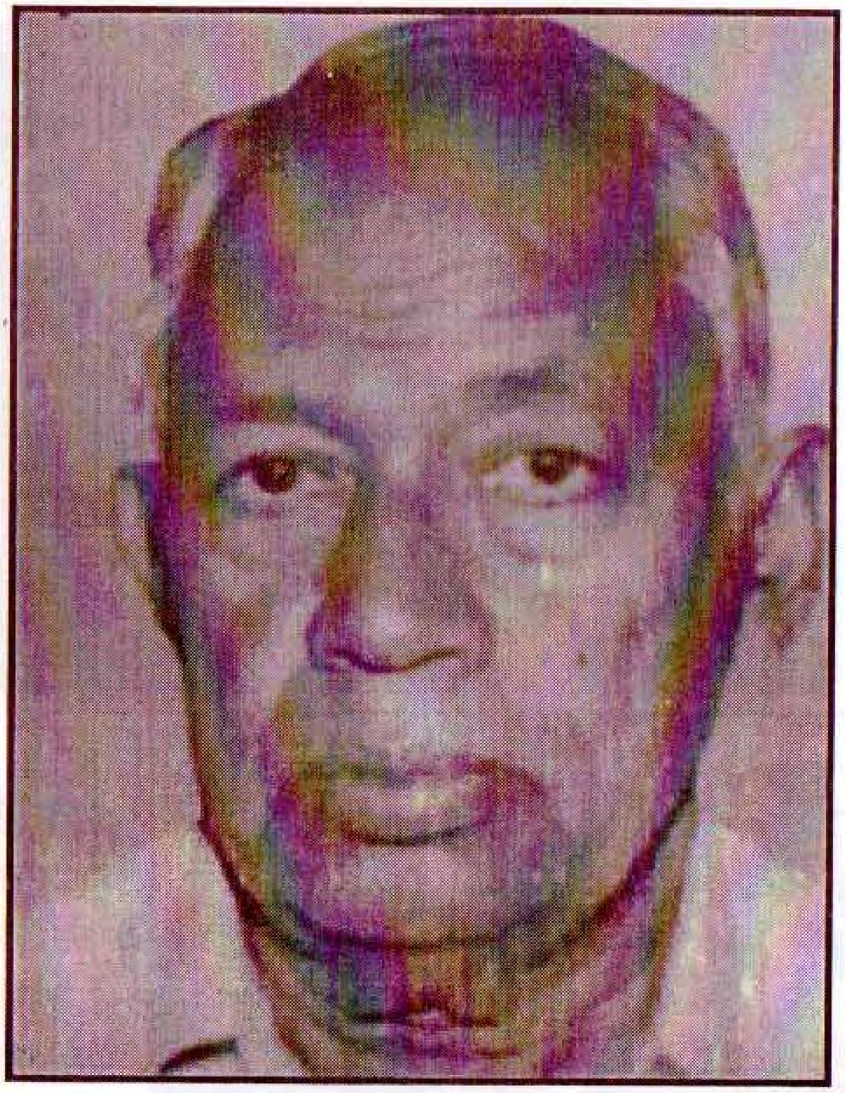

आर्यजगत् के ख्यातकीर्त इतिहासविद्, लेखक, गवेषक

प्रो.डॉ.भवानीलालजी भारतीय को

भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

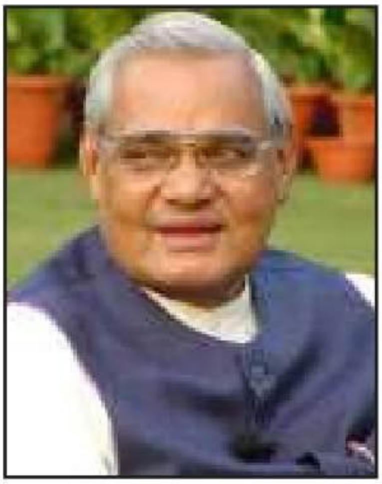

बहुमुखी व्यक्तित्त्व के धनी,
आर्य संस्कारों में बचपन बीतानेवाले
राष्ट्रीय नेता, प्रखर देशभक्त,
प्रतिभाशाली कवि,
भारतवर्ष के दसवें प्रधानमन्त्री,
भारतरत्न

श्री अटलबिहारी वाजपेयीजी

को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाजों की ओर से

भावभीनी श्रद्धांजलि...×

महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य×

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के आयोजन सन्दर्भ में औरंगाबाद में आयोजित राज्य के आर्यों की बैठक×

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ | कलि संवत् ५११९ | विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४ | भाद्रपद | १० सितम्बर २०१८

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६),
प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगंध ४
२) सम्पादकीय ५
३) श्रावणी वेदप्रचार पर्व-धन्यवाद विज्ञप्ति ७
४) स्मृतिशेष डॉ.भवानीलालजी भारतीय ८
५) स्वामी रामदेवजी का प्रेरक उद्‌बोधन १०
६) शोकसमाचार १४

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७
२) वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी १८
३) संग्रामकालीन क्रांतिकारी गाव-जानापुर २१
४) वार्ताविशेष २४
५) निधन वार्ता २९
६) सभा उपक्रम ३०

✲ प्रकाशक ✲
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✲ मुद्रक ✲
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध — **समस्त पदार्थ सुखकारक हो..×**

अहानि शं भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः।।

(यजु.३६/११)

पदार्थान्वय– हे परमेश्वर वा विद्वान् जन× जैसे **(अवोभिः)** रक्षा आदि के साथ **(शंयोः)** सुख की**(सुविताय)** प्रेरणा के लिये **(नः)** हमारे अर्थ **(अहानि)** दिन**(शम्)** सुखकारी **(भवन्तु)** हों, **(रात्रीः)** रातें**(शम्)** कल्याण के **(प्रति)** प्रति **(धीयताम्)** हमको धारण करें, **(इन्द्राग्नी)** बिजुली और प्रत्यक्ष अग्नि **(नः)** हमारे लिये**(शम्)** सुखकारी **(भवताम्)** होवें, **(रातहव्या)** ग्रहण करने योग्य सुख, जिनसे प्राप्त हुआ, वे **(इन्द्रावरुणा)** विद्युत और जल **(नः)** हमारे लिये**(शम्)**सुखकारी हों, **(वाजसातौ)** अन्नों के सेवन के हेतु संग्राम में **(इन्द्रापूषणा)** विद्युत और पृथिवी**(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखकारी होवें और **(इन्द्रासीमा)** बिजुली और औषधियां**(शम्)** सुखकारिणी हों, वैसे हमको आप अनुकूल शिक्षा करें।

भावार्थ – इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो× जो ईश्वर और प्राप्त सत्यवादी विद्वान् लोगों की शिक्षा में आप लोग प्रवृत्त रहो, तो दिन-रात तुम्हारी भूमि आदि सब पदार्थ सुखकारी होवें।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की लातूर में

-० अंतरंग बैठक ०-

महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा के नूतन पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि, उनकी अन्तरंग बैठक आगामी रविवार दि.०७ अक्टूबर २०१८ को प्रात: ११ बजे आर्य समाज रामनगर लातूर में रखी गयी है। इस बैठक में विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी।

अत: सभा के सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य बैठक में उपस्थित रहे।

-राजेन्द्र दिवे(मन्त्री, म.आ.प्र.सभा)

संपादकीयम् समलैंगिकता बनाम स्वेच्छाचारिता ?

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, अधिकार, पसंदगी आदि बातों को लेकर आज की व्यवस्था समूचे मानव समाज को पतन की ओर ले जा रही है । इसका ताजा उदाहरण है सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गत ६ सितम्बर को समलैंगिता पर दिया गया दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय...× अंग्रजों के जमाने में सन् १८६२ में जिसे अपराध के रूप में घोषित किया गया था, उसी को आज १५६ वर्षों के बाद न्यायालय के पांच मुख्य न्यायाधीशों ने मिलकर ÷अपराधिता' से मुक्त किया है। अपना निर्णय सुनाते हुए उन्होंने जो कहा, वह वैदिक विधिविधान व नीतितत्त्वों की पूर्णतया उपेक्षा करनेवाला है। वे कहते हैं- ÷यौन सम्बन्ध प्राकृतिक है, दो वयस्क समलिंगी आपसी सहमति से उसे अपना सकते है। नैतिकता की आड में उनके इस अधिकार को कोई छीन नही सकता। व्यक्तिगत अभिरुचि को अनदेखा नहीं किया जा सकता× सबको स्वतन्त्रता है, चाहे वह कैसा भी रहे। अतः समलैंगिक सम्बन्ध ÷अपराध' नहीं है।'

आश्चर्य का विषय है कि यह निर्णय मूल समस्या को छुडाने के बजाय उसे बढाने की चेष्टा करता है। यौन संबंध प्राकृतिक आकर्षण में स्त्री-पुरुषों अर्थात् विषमलिंगों में होना स्वाभाविक है। उनके सम्बन्ध से प्रजोत्पादन द्वारा सृष्टि का निर्माण कार्य शुरु होता है। समलैंगिकों के यौन सम्बन्ध से प्रजोत्पादन तो दूर रहा, बल्कि उससे तो केवल दुराचार बढने का भय रहता है। स्वतन्त्रता के नाम पर पहले ही आज युवा लडके-लडकियों में जब अनैतिकता शिखर पर हैं, तब समलिंगी सम्बन्धों की स्वतन्त्रता क्या सिद्ध करना चाहती है? पुरुष-पुरुष और महिला-महिलाएं अथवा अनेकों नपुंसक या तृतीय पन्थी लोग जब खुलेआम साथ-साथ घूमेंगें, शादी-ब्याह रचायेंगें अथवा वैसे ही पति-पत्नी के रूप में विचरण करते रहेंगें, तब देश के नौनिहाल बालक-बालिकाओं, विद्यार्थियों और युवक-युवतियों पर इसका क्या असर होगा? इसपर न तो शासन विचार करने के लिए तैयार है और न ही न्यायालय की कानून व्यवस्था× समलिंगों को जब खुले आम इस तरह स्वतंत्रतापूर्वक उन्मुक्त होकर जीने का अधिकार मिलेगा, तब उनमें नैतिकता का डर कतई नहीं रहेगा। स्वतन्त्रता का अधिकार मिलने पर और अधिक मात्रा में अपराधिक मामले क्यों नहीं बढेंगें? न्यायालय हो या शासन कोई भी निर्णय लेते समय संवैधानिक तत्त्वों की आड में एकतरफा चलते हैं, तो दूसरी तरफ अनदेखी की जाती है। निर्णय के पश्चात् उसके अनुचित परिणाम क्या आयेंगें ? इसपर कोई चिंता या चिन्तन नहीं करता।

परमात्मा की व्यवस्था में सभी एकसमान हैं। जिन्हें जैसा बनाया, उन्हें पूरी

तरह से मर्यादा में जीने का अधिकार है। इसका मतलब यह नहीं कि वे अपनी मर्यादाओं व नियमों को छोडकर जी चाहे मनमाने कैसे भी जिये। हाँ × यह बात सही है कि इन समाजघटकों को कभी अपमानित, तिरस्कृत या उपेक्षित करना गलत है, बल्कि उनके साथ सम्मानजनक ही व्यवहार करना चाहिए। पुराने जमाने में उनके साथ सम्मानपूर्वक बर्ताव होता था। उनके लिए प्रतिष्ठापूर्वक जीने की व्यवस्था थी। नृत्य, गायन, संगीत तथा विभिन्न कला-कौशल में उन्हें पारंगत कर उनका उपयोग विधायक कार्यों के लिए किया जाता था। उनकी प्राकृतिक अवस्था को देखकर आध्यात्मिक मार्ग के लिए उन्हें प्रोत्साहित भी किया जाता था।

आज जब टीवी, मोबाईल, इंटरनेट, फेसबुक आदि के माध्यम से सर्वत्र उन्मुक्तावस्था फैलती जा रही है, स्त्री-पुरुषों में स्वेच्छाचारिता भी बढती जा रही है। लिव्ह रिलेशनशिप की नई विकृति सर उठा रही है। विवाहित हो या अविवाहित स्त्री-पुरुषों के अनैतिक सम्बन्धों में बढोतरी हो रही है। परिणामस्वरूप बलात्कार, हत्याएं, यौन शोषन आदि घटनाएं बडे पैमाने पर घट रही है। इसीलिए सरकार या न्यायालय के पास प्रतिबन्धात्मक कोई उपाय नहीं है। ब्रह्मचर्यशिक्षा, चरित्रनिर्माण, अध्यात्म व योगविद्या आदि के प्रसार का कोई कार्यक्रम उनके पास नहीं है। तब ऐसे माहौल में समलिंगी समुदाय को मुक्त जीवन जीने के लिए वही व्यवस्था देकर न्यायालय क्या चरित्रविहिन समाज खडा कर रही है? फिर उनके अधिकार, स्वतन्त्रता आदि बातें सामने आ जाती है।

इन सभी बातों को सामने रखकर भारतीय न्यायप्रणाली को उचित था कि समलैंगिकों की जन्मगत अवस्था तथा शारीरिक व मानसिक कमजोरी को दृष्टिगत कर उनका समुपदेशन करती, उनका विनियोग अन्य उपयुक्त कार्यों के लिए कुछ नयी कार्ययोजनाएं उपलब्ध कराती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्हें समलिंगी सम्बन्ध स्थापन करने के लिए खुली छुट दी गयी, जिसके नैतिक व सामाजिक दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं। हम यह भूल रहे है कि, मानव समूह की समस्याओं का समाधान बाहरी नहीं है, बल्कि आन्तरिक है। कामवासना का उपाय यौनसंबंध नहीं, बल्कि ब्रह्मचर्य व संयम है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वैदिक विचारधारा के आधारपर मन व इन्द्रियों पर नियंत्रण करने, सन्मार्ग पर चलने, यौगिक शिक्षा को अपनाने तथा नैतिकता पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम प्राचीन ऋषि-मुनियों के बतायें इन शम, दम, वैराग्य आदि तत्वों को स्वीकार करेंगें, तो निश्चित रूप से समलैंगिकता जैसी समस्या खडी ही नहीं रह सकती। उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक मनमाने संबंध रखने की बात तो दूर ही रही...×

- नयनकुमार आचार्य

मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान

(श्रावणी वेदप्रचार पर्व २०१८)

सभाद्वारा विद्वानों व आर्यसमाजों के धन्यवाद

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य की लगभग १३२ आर्यसमाजों के लिए श्रावणी वेदप्रचार का आयोजन हुआ । मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान के अन्तर्गत दि.१२ अगस्त से ९ सितम्बर २०१८ के दौरान विभिन्न आर्य समाजों में ये श्रावणी पर्व मनाये गये।

इस वेदप्रचार अभियान में उत्तर भारत से लगभग १६ वैदिक विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया था। साथ ही अपने ही महाराष्ट्र प्रांत के लगभग ४० विद्वानों व भजनोपदेशकों को भी वेदप्रचार हेतु आमन्त्रित किया था। इन सभी विद्वान व भजनोपदेशकों ने बडी श्रद्धा के साथ जगह-जगह की आर्यसमाजों में प्रचार किया। वेदप्रचार के कार्यक्रम कही पर सात, पाँच या तीन दिनों तक चलते रहे। विशेषत: अनेकों आर्यसमाजों में वहाँ के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं ने उत्साह के साथ श्रावणी पर्व के आयोजन में बडी लगन के साथ कार्य किया। सभाद्वारा निश्चित की गयी तिथियों तथा भेजे गए विद्वानों द्वारा ही उन्होंने कार्यक्रम रखें। सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों की निवास व भोजन की व्यवस्था बढिया ढंग से की । आर्यसमाज के साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर भी कार्यक्रम रखे गये। अगले आर्यसमाजों तक विद्वानों को पहुंचाने की जिम्मेदारी भी उत्तम प्रकार से सँभाली। इसलिए सभा आपका अभिनन्दन करते हुए आपको शुभाशीष देती है×

आमन्त्रित सभी विद्वान व भजनोपदेशकों ने भी शहर व देहातों में यथाशक्ति वेदप्रचार कार्य में अपना पूरा योगदान देकर वेदप्रचार के इस अभियान को सफल बनाया। वेद प्रचार के इस पवित्र कार्य में आप सभी को काफी कष्ट उठाने पडे। इन सभी को आवागमन (यात्रा) में काफी असुविधाएँ हुई होगी। सभी ने बडी उदारता का परिचय देते हुए प्राप्त परिस्थितियों में इस वर्ष के श्रावणी वेदप्रचार उत्सव अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभायी।

अत: महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा बडे ही कृतज्ञभाव से आप सभी के हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करती हैं।

-० आपके ही कृतज्ञ-आभारोत्सुक ०-

योगमुनि	**राजेन्द्र दिवे**	**उग्रसेन राठौर**	**सुधाकर शास्त्री**
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परळी-वैजनाथ

११ सितम्बर को जिनका देहावसान हुआ, ऐसे ....

स्मृतिशेष डॉ.भवानीलाल भारतीय

आर्यजगत् के उच्च कोटी के ख्यातकीर्त विद्वान्, लेखक, गवेषक, इतिहासविद्, मनीषी, चिन्तक प्रो.डॉ.भवानीलालजी भारतीय का जन्म १९२८ ई. में राजस्थान में नागौर जिले के परबतसर नामक ग्राम में श्री फकीरचन्द्र माथुर(वकील) एवं श्रीमती रतन कंवर के यहाँ हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात् आपने एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) पी-एच.डी.(राजस्थान विश्वविद्यालय) की उपाधियां प्राप्त की । १२ वर्ष की अवस्था में ÷सत्यार्थ प्रकाश' के अधययन से जीवन क्रान्ति-पथ पर अग्रसर हुए। १९४९ से १९८० पर्यन्त राजस्थान में जोधपुर, पाली, अजमेर के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। सन् १९८० से १९९१ तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर के रूप में शोधकार्य तथा शोधार्थियों को कार्यनिर्देशन किया। २८ शोधछात्रों को पीएच.डी. की उपाधि दिलवायी ।

आप आर्य समाज पाली व अजमेर प्रधान पद पर भी रहे। आपने जोधपुर नगर की आर्य समाज की सदस्यता से लेकर सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधी सभा तक के विभिन्न पदों पर कार्य किया। सन् १९७० में परोपकारिणी सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित होने के पश्चात् संयुक्तमन्त्री एवं अन्तरंग सदस्य रहे। ÷परोपकारी' एवं ÷आर्य मार्तण्ड' पत्र का वर्षों तक सम्पादन किया। वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ भारत के सभी प्रान्तों में जाने के अतिरिक्त नेपाल, हॉलैण्ड, बेल्जियम, जर्मनी तथा मारिशस में अनेक मास तक प्रचारार्थ भ्रमण किया। रेडियो तथा टेलिविजन पर कार्यक्रम दिये ।

आपने १९४९ से लेखन कार्य आरम्भ किया। सन् २००१ की समाप्ति तक वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, गीता, दर्शन आदि विषयों तथा मुख्यत: महर्षि दयानन्द के जीवन कार्य एवं व्यक्तित्त्व की विवेचना से सम्बद्ध लगभग १४० ग्रन्थ रचे। पत्र-पत्रिकाओं में दयानन्द विषयक शताधिक शोधनिबन्धों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर हजारों लेख लिखे। आर्य लेखक परिषद के आप संस्थापक अध्यक्ष भी रहे हैं।

आपके लिखे हुए प्रमुख ग्रन्थ इस प्रकार हैं - १. संस्कृत भाषा और साहित्य को ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की देन(शोध-प्रबन्ध), २.महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, ३.श्रीकृष्ण चरित, ४. ज्ञान दर्शन तथा भारतवर्षीय मतमतान्तर-समीक्षा, ५.नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती, ६. दयानन्द-साहित्य-सर्वस्व, ७. आर्य समाज के

साहित्य का इतिहास, ८.स्वामी श्रद्धानन्द-ग्रन्थावली(९ खण्डों में), ९.आर्य लेखक - कोश, १०. उपनिषदों की कथाएं, ११. हिन्दी काव्य को आर्य समाज की देन, १२. जर्मनी के संस्कृत-विद्वान् आदि। ऋषि दयानन्द के अनेकों जीवन-चरित्रों का आपने सम्पादन किया है। अंग्रेजी तथा गुजराती भाषा के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया है ।

आर्यसमाज के सर्वोच्च साहित्य - सम्मान ÷मेघ' जी भाई आर्य पुरस्कार (१९९२) के अतिरिक्त आपको लगभग डेढ दर्जन से भी अधिक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ऐसे महामना विद्वन्मनीषी, अजस्त्र लेखनी के धनी प्रो.डॉ.भवानीलालजी भारतीय के देहावसान से आर्य जगत् की विद्वन्माला का एक चमकता मोती लुप्त हो गया है। अब उनका स्थानाभाव आर्यजनों को सदा के लिए अनुभूत होता रहेगा। स्मृतिशेष भारतीय जी को कृतज्ञ भाव से सश्रद्ध नमन..× * * *

आर्य समाज परली-वै. अंतर्गत

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

-० सहाय्यता हेतु निवेदन ०-

सभी गुरुकुल प्रेमी माता-बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, वैदिक युवा विद्वान श्री सत्येन्द्रजी विद्योपासक के आचार्यत्व में स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम पुनश्च क्रियान्वित हो चुका है। सम्प्रति इस गुरुकुल में २० ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं। नंदागौल मार्ग पर स्थित रम्य प्राकृतिक वातावरण में अनेकों दान-दाताओं की सहयोग से गुरुकुल की गतिविधियाँ प्रगति पर है। बढते खर्चे को देखते हुए गुरुकुल सेवा समिति द्वारा सभी दान-दाताओं को आर्थिक सहयोग के लिए अपील की जा रही है। क्योंकि महंगाई के इस जमाने में आर्थिक सहाय्यता की आवश्यकता प्राथमिक मानी जाती है। बहुत सारे सज्जन एवं दानी आर्य कार्यकर्त्ता प्रतिमाह रू.१००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रू.१०००, रू.५०००, रू.११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

खाता धारक का नाम - मंत्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ
बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली-वै. जि.बीड
बैंक खाता क्र.11154152876, IFSC Code SBIN0003406

गुरुकुल सम्मेलन में स्वामी रामदेव जी का प्रेरक सम्बोधन

दयानन्द और श्रद्धानन्द न होते,तो रामदेव भी न होते×

प्रस्तुति- मनमोहनकुमार आर्य

तीन दिवसीय गुरुकुल सम्मेलन, गुरुकुल कांगडी परिसर में ६ जुलाई, २०१८ को आरम्भ हुआ। अपराह्न ४ बजे से सम्मेलन का उद्‍घाटन समारोह हुआ, जिसे पतंजलि योगपीठ के विश्व विख्यात योगाचार्य स्वामी रामदेवजी, मेघालय के राज्यपाल ऋषिभक्त श्री गंगाप्रसादजी एवं कई आर्य संन्यासी एवं नेताओं ने सम्बोधित किया। स्वामी रामदेव जी ने ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए अपने सम्बोधन के आरम्भ में तीन नारे लगाये ÷सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय, महर्षि दयानन्द की जय और भारतमाता की जय× सम्बोधन के आरम्भ में स्वामी रामदेवजी ने कहा कि ÷यदि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द न होते, तो स्वामी रामदेवजी भी न होते। उन्होंने कहा कि आज दुनियांवाले कहते हैं कि अब ऑक्सफोर्ड व हावर्ड युनिवर्सीटीवाले पीछे छूट गये हैं और गुरुकुल वाले उनसे आगे बढ गये हैं। हम ऋषि परम्परा और आर्य मान्यताओं को मानते हैं। स्वामी जी कहते व चाहते है वैसो ही हो जाता है। उन्होंने कहा कि हम वेद को मानने वाले है। आर्यसमाज एक हो जायेगा, तो दुनिया से पाखण्ड व अन्धविश्वासों का अन्त हो जायेगा। स्वामी रामदेवजी ने पिछले दिनों दिल्ली के पास ११ लोगों की आत्महत्याओं की चर्चा की और उस पाखण्ड व अन्ध-विश्वास का भी उल्लेख किया, जिसके कारण ११ मानव जीवन नष्ट हो गये। उन्होंने कहा कि पाखण्ड एवं अन्ध विश्वासों का समाधान महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा है। स्वामी रामदेवजी ने कहा कि देश के पाखण्डी एवं अंधविश्वासी लोग देश की पचास हजार करोड से अधिक की धन व सम्पत्ति प्रति वर्ष लूटते हैं। उन्होंने कहा कि, आर्यसमाज के विद्वानों और ऋषि भक्तों को देश के लोगों को ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताना चाहिये।

सभी पाखण्डों एवं अंधविश्वासों का पूरे दम खम के साथ खण्डन करना चाहिये। ऋषिभक्त स्वामी रामदेवजी ने

कहा कि पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी, मांसाहार आदि देश व समाज के शत्रु हैं। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज का कोई अनुयायी मांसाहार, नशाखोरी, अश्लीलता और अन्धविश्वास के कार्य नहीं करता। आर्यसमाज को पूरे देश में नशाबन्दी का आन्दोलन चलाना चाहिये, जिससे देश में एक भी व्यक्ति नशाखोरी करनेवाला व्यक्ति न मिले। स्वामी रामदेवजी ने आगाह करते हुए कहा कि दलितों, शोषितों, वंचितों को आर्यसमाज से लडाने की कोशिश की जा रहीं है। केवल राजनैतिक आजादी से देश स्वतन्त्र नहीं हो जाता। उन्होंने कहा कि वैचारिक स्वतन्त्रता के साथ देश के नागरिकों को देश के इतिहास व ज्ञान से युक्त परम्पराओं का भी सम्मान भी करना चाहिये। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने देश को एक मशीन बना दिया है। हमें वेदों की शिक्षा से देश के लोगों का समग्र दिव्य विकास करना है। मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है। उसे जागृत करने का काम शिक्षा का है।

स्वामीजी ने बताया कि उन्होंने बचपन में ही आर्योद्देश्यरत्नमाला, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषि दयानन्द के अनेक ग्रन्थों को कम से कम तीन बार पढ लिया था। फिर मैंने अध्ययन के लिए गुरुकुल की तलाश की। लोगों से पूछता हुआ मैं गुरुकुल प्रभात आश्रम पहुंचा, जहां मुझे कहा गया कि तुम्हारी उम्र दो वर्ष अधिक है। तुम्हें उस गुरुकुल में भर्ती नहीं किया जा सकता। मुझे गुरुकुल कालवां जाने को कहा गया। मैं वहां पहुंचा, तो उन्होंने मेरी उम्र दो वर्ष कम बता कर मुझे प्रवेश देने से मना कर दिया। इसके बाद मैं गुरुकुल खानपुर गया। वहां पर कहा गया कि वे मुझे तभी प्रविष्ट करेंगें, जब वह मेरे माता-पिता को पत्र लिख कर उनकी स्वीकृति प्राप्त कर लेंगे। उन्होंने पत्र लिखा। तब हमने ठान लिया कि पढना है, तो गुरुकुल में ही पढना है।

स्वामी रामदेवजी ने आगे कहा कि गुरुकुल मानव जीवन निर्माण वा मनुष्य जीवन बनाने की श्रेष्ठ पद्धति है। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से मानव जीवन का समग्र विकास होता है। जो मनुष्य गुरुकुल पद्धति से दीक्षित हो गया वह देवत्व व ऋषित्व पर आरोहण करता है।

स्वामीजी ने कहा कि आर्यसमाज विश्व का सबसे बडा आध्यात्मिक एवं सामाजिक संगठन है। यदि आजादी के समय हम अपना एक राजनैतिक संगठन खडा कर लेते, तो आज हमें दूसरे राजनीतिक दलों से अपनी मांगें पूरी करने के लिए प्रार्थना न करनी पडती। आज हम भीख मांगने की स्थिति में न होते। स्वामीजी ने कहा कि राजनीति शक्ति के

बिना काम नहीं चलता। हमें सरकार व राजनीतिक दलों से मांगना पडता है कि हमारे गुरुकुलों को मान्यता दे दो । हमें दूसरों से मांगना पडे यह हमारे लिए धिक्कार है। इसके बाद स्वामीजीने पं.सत्यपाल÷पथिक' का भजन गाया–
÷सूरज बन दूर किया पापों का घोर अन्धेरा। वह देव गुरु है मेरा। वह देव ....।।
मथुरा नगरी से उदय हुआ विरजानन्द का चेरा। वह देव गुरु है मेरा, वह देव ...।।'

भजन के मध्य में ही स्वामीजी ने कहा कि आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य कोई संस्था देश में नहीं है, जो वेद पढाती हो। आर्यसमाज में स्त्रियों से भेदभाव नहीं है। इसका देश के स्तर पर प्रचार करने की जरूरत है। इसके बाद भजन फिर जारी रहा। स्वामीजीने इसी बीच पथिक जी को स्मरण कर कहा कि मैंने उन्हें यहां घूमते हुए देखा है। पथिक जी ने भजनों के माध्यम से आर्यसमाज व देश की बहुत बडी सेवा की है। मैं लगभग ८० प्रतिशत भजन उन्हीं के गाता हूँ। पथिक जी जहां हों, वे मंच पर आ जायें। यह बात उन्होंने दो–तीन बार दोहराई। कुछ देर बाद पथिक जी मंच पर पहुंचे। इसी बीच स्वामी रामदेवजी ने घोषणा की वह पथिक जी के सम्मान में एक लाख रुपये की धनराशि देंगें। आप उनका यहां अच्छी प्रकार से अभिनन्दन करें। पथिक जी को स्वामी रामदेवजी ने और स्वामी आर्यवेशजी ने ओ३म् का पट्टा पहना कर सम्मानित किया

स्वामी जी ने कहा कि मैं दो चीजों को मानता हूं। आपके चेहरों पर सदा मुस्कान रहनी चाहिये। इसके बाद स्वामीजी ने ऋषि दयानन्द के चेहरे के भावों का किसी विद्वान लेखक द्वारा वर्णन किया। (हम उनके कहे कुछ ही शब्द नोट कर सके।) उन्होंने कहा ऋषि समुद्र की तरह भीतर से शान्त, बाहर से क्रियाशील, हिमालय की चोटियों में सबसे ऊँची चोटी पर बैठे हुए, ऐसे थे ऋषि दयानन्द। शायद इसी प्रकार के शब्द योगी अरविन्द जी ने भी कहे हैं। स्वामीजी ने पंथ निरपेक्षता की भी चर्चा की । उन्होंने कहा सेकुलरज्मि का किसी ने सच्चा दर्शन दिया है, तो वह ऋषि दयानन्द ने दिया। ऋषि दयानन्द मनुष्य मात्र के प्रति कल्याण की भावना रखते थे। दूसरी बात स्वामी रामदेवजी ने यह बताई कि सदा सर्वदा सबसे प्रीति किया करें। यह बात आप स्वामी दयानन्द जी से सीख लो। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने उन्हें जहर पिलाने वाले पाचक को भी माफ कर दिया था। अपने विषदाता को माफ करनेवाला महर्षि दयानन्द दुनियां का अपूर्व मनुष्य था।

स्वामीजी ने कहा कि आर्यसमाज के लोगों की संख्या ४–५ करोड तो है ही। राजनीतिक दल आर्यसमाज की बात नहीं

सुनते। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाजी संगठित हों जायें, तो राजनीतिक दल हमारी उपेक्षा नहीं कर सकेंगे। स्वामी जी ने कहा कि किसी भी संगठन में मतभेद हो सकते हैं। ÷मुंडे मुंडे मतिभिन्ना' का उच्चारण किया। किन्हीं विषयों पर मनुष्यों की मति अलग-अलग हो सकती है। संगठन में सबको एक मन, मस्तिष्क व विचारवाला होना चाहिये। उन्होंने कहा कि हम वेद को मानते हैं। स्वामी जी ने संगठन सूत्र के दूसरे मंत्र ÷ओ३म् सं गच्छध्वं सं वो मनांसि जानताम्' को पूरा बोल कर सुनाया। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद का अन्तिम सन्देश ÷संगठन-सूक्त' है। हममें संगठन व राष्ट्र निष्ठा होनी चाहिये। इसके लिए हमें व्यक्तिगत अहंकार को नीचे लाना पडेगा।

स्वामी रामदेवजी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व गुरुकुल सम्मेलन के लिए स्वामी आर्यवेश जी हमारे यहां आये थे और उसके बाद दिल्ली सम्मेलन के लिए श्री सुरेश अग्रवाल जी व श्री विनय आर्य आदि कुछ लोग भी आये । मैंने उनसे संगठन के हित में मतभेद दूर कर एकता करने के लिये निवेदन किया। उन्होंने अपनी ओर से मुझे इस कार्य को करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि आप जो कहेंगें हम उसे मानेंगें। स्वामी रामदेवजी ने घोषणा की कि वह कोशिश करेंगे कि अक्तूबर, २०१८ के दिल्ली आर्य महासम्मेलन से पूर्व हम सब एक हो जायें और उस सम्मेलन में हम सब एक साथ भाग लें। स्वामी रामदेवजी ने कहा कि हमारा जीवन दस, बीस अथवा पचास वर्ष का हो सकता है। हमारा राष्ट्र, हमारा धर्म व संस्कृति हमेशा रहेगी। स्वामी जी ने कहा कि हमारे कारण हमारे राष्ट्र का अहित नहीं होना चाहिये। उन्होंने अपना संकल्प प्रस्तुत करते हुए वेदमंत्र **÷ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः।'** बोला। इसे बाद उन्होंने **÷ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आसुव'** का पाठ किया। उन्होंने कहा कि आप एक पल के लिए भी दुरित भावनाओं का आदर न करें। कभी अशुभ का आदर न करें। दुरित भावनाओं को अपने भीतर स्थान न दें। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि यदि एक-एक व्यक्ति अपने आप को स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द बना लें, तो आर्यसमाज का कल्याण होगा।

इस समारोह में आर्यजगत् के संन्यासी, विद्वान्, मनीषी, आर्य कार्यकर्त्ता एवं गुरुकुल के स्नातक अत्यधिक संख्या में उपस्थित थे।

- १९६, ब्लॉक २, चुक्खूवाला,
देहरादून (उत्तराखंड)
मो. ९४१२९८५१२१

***

मणिकर्णिकादेवी काले का देहावसान

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी की भाभी सौ.मणिकार्णिकादेवी (मनाबाई) मारुतीराव काले का ३१ मार्च २०१८ को प्रात: ५.३० बजे अल्पकालीन बिमारी से असामायिक निधन हो गया। वे अपने पश्चात् पतिदेव, तीन पुत्र, तीन कन्याएं, दामाद, बहुएं, पौत्र-पौत्रिंयों व प्रपौत्रों से सुसम्पन्न परिवार को छोडकर इहलोक से विदा हो गयी। गत छह माह से वे कैंसर की बिमारी से ग्रस्त थी। श्रीमती मनाबाई की आयु ७८ वर्ष की थी ।

काले दम्पत्ती औराद(ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद) के निवासी थे। प्रतिकूल परिस्थितियां में उनका समग्र जीवन कृषि सेवाकार्य में बीता। श्रीमती मनाबाई एक पतिपरायणा, संघर्षशील गृहिणी तथा संस्कारप्रदात्री माता के रुप में अग्रणी रही। सौम्य, शान्त एवं सहनशील स्वभाव के कारण उनकी ग्राम व परिवार में आदर्श महिला के रूप विशेष छवी रही है।

माता मनाबाई के पार्थिव पर सायंकाल ४ बजे पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। सर्वश्री लक्ष्मण आर्य, प्रशान्त शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री, तानाजी शास्त्री, अरुण चौहान, नयन आचार्य आदि पण्डितों द्वारा सम्पन्न कराये गये । इस वैदिक अन्तेष्टि संस्कार से ग्रामवासी काफी प्रभावित हुए।

श्रीमती बिराजदार का निधन

सभा के उपमन्त्री तथा आर्य समाज सोलापुर के वरिष्ठ सदस्य श्री शंकरराव बिराजदार की माताजी श्रीमती धोण्डाबाई विठ्ठलराव बिराजदार का दि.२२ अप्रैल २०१८ को दोपहर ४.१० बजे निधन हो गया। वे ८८ वर्ष की थी। उनके पीछे तीन पुत्र व कन्या, दामाद, पुत्रवधुएं तथा अन्य सदस्य विद्यमान हैं।

ताम्बाला(ता.निलंगा) यह उनका श्वसूरग्राम एक समय हैदराबाद संग्रामकालीन घटनाओं का केन्द्र रहा। जब भालकी के आर्ययुवक धर्मप्रकाश का बलिदान हुआ, तब इस परिसर में देशरक्षा व आर्य समाज के प्रचार को लेकर बहुतही समाज में जागृति हुई। इससे धोण्डाबाई भी काफी प्रभावित हुई और उन्होंने बच्चों व महिलाओं में क्रान्तिगीतों के माध्यम से देशभक्ति का वातावरण

तैयार किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् वे १९६६ से १९७२ तक स्थानीय ग्रामपंचायत के सदस्य भी रही। कोमल व सुस्वभावी माता धोण्डाबाई के कार्य सदैव प्रेरणा देते रहेंगें। उनके पार्थिवपर आर्य समाज पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये।

राजवीरजी शास्त्री को मातृशोक

सोलापुर (महाराष्ट्र) के वैदिक विद्वान तथा प्रचारक पं.राजवीरजी शास्त्री की माताजी श्रीमती गीताबाई शिवाजीरावजी भोसले का गत १ मई २०१८ को वृद्धावस्था के कारण ८२ वर्ष की आयु में दु:खद निधन हुआ। वे अपने पश्चात् पंडितजीसहित दो पुत्र, चार कन्याएं, पुत्रवधू,दामाद तथा पौत्रादियों से भरा परिवार छोडकर विदा हुई।

श्रीमती भोसले गत २ वर्ष से मधुमेह एवं वृद्धापकालीन अन्य बिमारियों से पीडित थी। इस अन्तिम काल में परिवार ने उनकी बडी लगन से सेवाशुश्रूषा की। गुंजोटी जैसे क्रांतिकारी ग्राम की निवासिनी गीताबाई ने अपने पतिदेव आर्य समाज प्रसार कार्य में पूरा सहयोग दिया। सरल व मधुर स्वभाव, मिलनसरिता, मितभाषिता एवं स्नेहशीलता के कारण उनका व्यक्तित्त्व सबके लिए आकर्षण का केन्द्र रहा।

दिवंगतात्मा के पार्थिव पर दूसरे दिन प्रात: सोलापुर नगर के सार्वजनिक स्मशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। पं.महालप्पा दुधभाते एवं पं.चन्द्रकान्त वेदालंकार ने यह दाहकर्म सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आर्य समाज सोलापुर तथा गुंजोटी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता गण उपस्थित थे।

प्रो.डॉ.सुभाषजी वेदालंकार का निधन

संस्कृत साहित्य के विद्वान् एवं प्रसिद्ध कवि, अनेकों ग्रन्थों के लेखक, गुरुकुल कांगडी के स्नातक, राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ.सुभाषजी वेदालंकार का दि.६ जुलाई २०१८ को दुखद निधन हो गया।

श्री वेदालंकारजी आधुनिक परम्परा के संस्कृत कवि माने जाते थे। उन्होंने अनेकों विषयों पर नये ढंग से कविताएँ रची। संस्कृत को परिवार की मातृभाषा बनानेवाले तथा संस्कृत के साथ जीनेवाले वे एक श्रेष्ठतम कवि थे। ऐसे आर्य जगत् के एक महान, विद्वान् कवि को खोकर संस्कृत काव्यसंसार आज शोकसंतप्त हैं।

डॉ.बी.एन. मदनसुरे दिवंगत

प्रसिद्ध नेत्रचिकित्सक एवं आर्य विचारों के दृढ अनुगामी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉ.बजरंग नरसिंहराव मदनसुरे का उदगीर में दि.२७ जून २०१८ को दोपहर २.३० बजे अल्पकालीन बिमारी के कारण दु:खद निधन हुआ। वे ६३ वर्षों के थे। अपने पश्चात् वे धर्मपत्नी डॉ.सुजाता, पुत्र इंजि.कणाद, कन्या डॉ.अभिज्ञा तथा पुत्रवधू डॉ.साईशा भाई व बहन आदियों को छोडकर विदा हुए।

श्री डॉ.मदनसुरे विगत तीन-चार वर्षों से मधुमेह, कीडनी व रक्तचाप के कारण अस्वस्थ चल रहे थे। चार-पांच माह से इसमें बढोतरी हो गयी। लातूर, पुणे एवं उदगीर में काफी इलाज कराये गये। अन्ततोगत्वा स्थानीय÷लाईफ केअर' अस्पताल में उन्होंने अन्तिम सांस ली।

बचपन से ही श्री बजरंगजी पर वैदिक विचारों के संस्कार दृढ होते गये। मुनष्यकृत जाति प्रथा को तोडकर इनका तथा इनके सभी भाई-बहनों के (अन्तर्जातीय) विवाह हुए। श्री मदनसुरे में आरम्भ से ही सेवा, सरलता, साधुता एवं परोपकार की भावना रही है। आर्य समाज उदगीर के प्रचार व प्रसार कार्य में उन्होंने योगदान दिया। इस डॉक्टर दम्पती की प्रेरणा व सहायता से ही लगातार ५-६ वर्ष तक उदगीर में कन्या संस्कार शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन होता रहा। प्रतिवर्ष संस्कृत दिवस व श्रावणी पर्व पर वे अपनी ओर से आर्थिक सहयोग देते थे।

उनके पार्थिव पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। इस अवसर प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, डॉ.लखोटिया, डॉ.नरेन्द्र शिन्दे, प्रा.शरदचन्द्र डुमणे, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्राचार्य वेदमुनिजी आदियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

सभी दिवंगत आत्माओं को महाराष्ट्र सभा एवं आर्यजनों की भावभीनी श्रद्धांजलि×

सभा के संरक्षक पदपर श्री बलिरामजी पाटील नियुक्त

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की नयी कार्यकारिणी में प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री बलीरामजी पाटील(निलंगा) को संरक्षक पदपर नियुक्त किया गया है। अब सभा में स्वामी श्रद्धानन्दजी, डॉ.ब्रह्ममुनिजी के साथ श्री पाटील भी संरक्षक होंगें। साथ ही श्री ज्ञानकुमारजी आर्य को आजीवन सदस्य एवं व डॉ.नयनकुमार आचार्य को प्रतिष्ठित सदस्य बनाया गया है। सभा के पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है।

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — ईश्वराची सर्वव्यापकता...×

अग्नियेथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च।।

(कठोपनिषद-५/९)

ज्याप्रमाणे एकच अग्नी कार्यरूप भौतिक पदार्थांमध्ये किंवा लोक-लोकांतरामध्ये व्याप्त होऊन(पसरून) विविध रूप धारण करणाऱ्या वस्तूंशी एकसमान (सारख्या) रूपाप्रमाणे व्याप्त होत आहे, त्याचप्रमाणे सर्व प्राण्यांत विद्यमान असणारा तो एक अंतर्यामी परमेश्वर प्रत्येक रूपवान पदार्थाला एक सारखा रूप प्रदान करणारा आहे. तो पदार्थांच्या आत व त्याबाहेर देखील व्यापक आहे.

दयानंद वाणी — स्वराज्याचा उद्घोष...×

आता दुर्दैवाने आर्यांमधील आळस, प्रमाद व आपसांतील यादवी या दोषांमुळे इतर देशांवर राज्य करण्याची गोष्ट तर दूरच राहिली, पण खुद्द आर्यवर्त्तातही आर्यांचे अखंड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य राहिले नाही. जे कांही उरले आहे, तेही विदेशी लोकांकडून पादाक्रांत केले जात आहे. कांही थोडे राजे स्वतंत्र आहेत. जेंव्हा वाईट दिवस येतात, तेंव्हा देशवासीयांना अनेक प्रकारची दु:खे भोगावी लागतात. कोणी कांही म्हंटले तरी स्वदेशी राज्यही पूर्णपणे सुखदायक होत नाही. परंतु वेगवेगळ्या भाषा, भिन्न प्रकारचे शिक्षण आणि भिन्न व्यवहार यांच्यामुळे निर्माण होणारा विरोध नाहीसा होणे अत्यंत कठीण आहे. तो नाहीसा झाल्याखेरीज लोकांना एकमेकांचे हित साधणे व आपले उद्दिष्ट साध्य करणे सहजासहजी शक्य होणार नाही. म्हणून वेदादी शास्त्रांमध्ये जे काही सांगितले आहे, त्यावरून विधिनिषेधाची जी व्यवस्था इतिहासात प्रतिपादिली आहे, ती मान्य करणे हे सज्जनांच्या दृष्टीने उचित होय. **(सत्यार्थप्रकाश-८ वा समुल्लास)**

वैदिक ज्ञान-प्रश्नोत्तरी...×

संकलन–प्रा.शरद डुमणे

प्र.१ सृष्टीच्या आरंभी ईश्वराचे ज्ञान कसे मिळाले ?

उत्तर : वेदांद्वारे.

प्र.२ वेद म्हणजे काय ?

उत्तर : विशेष ज्ञान×

प्र.३ वेद किती आहेत ?

उत्तर : चार.

प्र.४ चार वेदांची नावे कोणती आहेत?

उत्तर : ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद.

प्र.५ सृष्टीच्या आरंभी वेदांचे ज्ञान कसे प्रकट झाले ?

उत्तर : चार ऋषींना त्यांच्या पवित्र अंत:करणात बुद्धीद्वारे प्रकट झाले.

प्र.६ ऋग्वेदांचे ज्ञान कोणत्या ऋषीला प्राप्त झाले ?

उत्तर : अग्नी ऋषी×

प्र.७ यजुर्वेदाचे ज्ञान कोणत्या ऋषीला प्राप्त झाले ?

उत्तर : वायु ऋषी×

प्र.८ सामदेवाचे ज्ञान कोणत्या ऋषीला प्राप्त झाले ?

उत्तर : आदित्य ऋषी×

प्र.९ अथर्ववेदाचे ज्ञान कोणत्या ऋषीला प्राप्त झाले ?

उत्तर : अंगिरा ऋषी×

प्र.१० ऋषींना वेदांचे ज्ञान कसे प्राप्त झाले ?

उत्तर : समाधी अवस्थेत गेल्यावर

प्र.११ वेदांमध्ये कोणत्या प्रकारचे ज्ञान आहे ?

उत्तर : पवित्र, वैज्ञानिक, तर्कशुद्ध, सुख व शांती मिळवून देणारे आणि ज्ञान विकासाचे बाबतीत.

प्र.१२ ऋग्वेदांत कोणत्या प्रकारचे ज्ञान आहे ?

उत्तर : ज्ञानासंबंधी.

प्र.१३ यजुर्वेदामध्ये कोणत्या प्रकारचे ज्ञान आहे ?

उत्तर : कर्मा विषयी.

प्र.१४ सामवेदात कोणत्या प्रकारचे ज्ञान आहे ?

उत्तर : उपासना व गायनासंबंधी.

प्र.१५ अथर्ववेदात कोणत्या प्रकारचे ज्ञान आहे ?

उत्तर : विज्ञान व कलासंबंधी.

प्र.१६ ऋग्वेदात किती मंडळे आहेत ?

उत्तर : दहा.

प्र.१७ ऋग्वेदांच्या मंत्रांना काय म्हणतात ?

उत्तर : ऋचा.

प्र.१८ ऋग्वेदात किती ÷ऋचा' आहेत?

उत्तर : १०,५५२.

प्र.१९ यजुर्वेदात किती अध्याय आहेत?

उत्तर : चाळीस.

प्र.२० यजुर्वेदात किती मंत्र आहेत ?

उत्तर : १,९७६.

प्र.२१ सामवेदात किती मंत्र आहेत ?

उत्तर : १,८७५.

प्र.२२ अथर्ववेदात किती कांडे आहेत?

उत्तर : वीस कांडे.

प्र.२३ अथर्ववेदात किती मंत्र आहेत ?

उत्तर : ५,९७७.

प्र.२४ चारही वेदात एकूण किती मंत्र आहेत ?

उत्तर : २०,३८०.

प्र.२५ वेदांना समजण्यासाठी सहाय्यक ग्रंथ कोणते ?

उत्तर : उपवेद, वेदांग, उपनिषद, स्मृती

प्र.२६ उपवेद किती आहेत ?

उत्तर : चार.

प्र.२७ उपवेदांची क्रमाने नावे सांगा?

उत्तर : ऋ-आयुर्वेद, यजु-धनुर्वेद, साम-गांधर्व वेद, अथर्व-अर्थवेद.

प्र.२८ वेदांगे किती आहेत ?

उत्तर : सहा.

प्र.२९ वेदांगांची नावे काय ?

उत्तर : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष.

प्र.३० वेदांगांची उपअंगे किती आहेत?

उत्तर : सहा.

प्र.३१ उपांगांची नावे काय आहेत?

उत्तर : न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा व वेदांत.

प्र.३२ उपांगाचे दुसरे नाव काय ?

उत्तर : दर्शन म्हणजेच प्र.३१ च्या उत्तरातील सहा ग्रंथांना ÷दर्शन' म्हंटले जाते.

प्र.३३ उपनिषद किती आहेत ?

उत्तर : अकरा.

प्र.३४ उपनिषदांची नावे काय ?

उत्तर : ईशोपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, तैत्तिरीयोपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्योपनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद आणि श्वेताश्वतरोपनिषद.

प्र.३५ उपनिषदांची रचना कोणी केली?

उत्तर : ऋषी-मुनींनी.

प्र.३६ न्यायदर्शन ची रचना कोणी केली?

उत्तर : गौतम-मुनींनी.

प्र.३७ वैशेषिक दर्शनची रचना कोणी केली ?

उत्तर : कणाद-मुनींनी.

प्र.३८ सांख्य दर्शनची रचना कोणी केली?

उत्तर : कपिल-मुनींनी.

प्र.३९ योगदर्शनची रचना कोणी केली?

उत्तर : पतंजली-मुनींनी.

प्र.४० मीमांसा दर्शनचे रचनकार कोण?

उत्तर : जैमिनी-मुनी.

प्र.४१ वेदांत दर्शनचे रचनाकार कोण?

उत्तर : वेदव्यास-मुनी.

प्र.४२ ब्राह्मण ग्रंथ कशाला म्हणतात?

उत्तर : वेदांचे भाष्य(अर्थ) समजण्यासाठी जे ग्रंथ तयार झाले, त्यांना ब्राह्मण ग्रंथ म्हणतात.

प्र.४३ मुख्य किती ब्राह्मण ग्रंथ आहेत? त्यांची नावे कोणती?

उत्तर : मुख्य ब्राह्मण चार आहेत.- ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, साम व ताण्डय महाब्राह्मण आणि गोपथ ब्राह्मण× हे चारही ब्राह्मण ग्रंथ अनुक्रमे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद यांच्यासाठी.

प्र.४४ वेद आम्हांस कशा प्रकारे जीवन कंठावे याचा उपदेश देतात ?

उत्तर : सुख व शांतीने.

* * *

- डी.आर.दास सदन, सिग्नल कँप,
देशी केंद्र विद्यालयामागे, लातूर
मो.९४२०४३४६२३

आर्य व्यक्तिमत्वाचा असाही प्रभाव

शिवणखेडच्या सोसायटी चेअरमनपदी आरदवाड बिनविरोध

आर्य समाजी विचार व संस्काराच्या प्रभावामुळे माणसाची प्रतिमा कशी उंचावते आणि परिसरात त्यांच्या आदर्शांच्या पाऊलखुणा कशा पडतात ? याचे ज्वलंत उदाहरण म्हणजे चाकुर तालुक्यातील शिवणखेड(बु.) चे आर्य कार्यकर्ते× हे सर्व आर्यजण वैदिक विचारांचा वारसा जोपासत सिद्धांतनिष्ठ बनून आपल्या शेती व उद्योगधंद्यात कार्यमग्न आहेत. सोबतच आपल्या पवित्र आचरणाने गावात व समाजात पद आणि प्रतिष्ठा ही मिळवून आहेत...× त्यांपैकीच एक व्यक्तिमत्त्व म्हणजे आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष श्री भागवतराव नरसिंग आरदवाड× गावातले छोटे-मोठे वाद-विवाद किंवा भांडणे असो की महत्त्वाची कामे× आरदवाड व त्यांचे सहकारी त्यात नेहमीच पुढे असतात. परिणामी गेली ६ वर्षे तंटामुक्तीचे अध्यक्ष म्हणून श्री भागवतरावांनी काम पाहिले. गावातील विविध कार्यकारी सेवा सोसायटीचे बहुतांश संचालक त्यांनीच निवडून आणले व आपल्या गटातील व्यक्तीला चेअरमन बनविले.... आता विशेष गोष्ट म्हणजे दि.८ फेब्रुवारी २०१८ रोजी झालेल्या १३ संचालकांच्या बैठकीत श्री आरदवाड चेअरमनपदी बिनविरोध निवडून आले. श्री आरदवाड हे या पदाला योग्य तो न्याय देत असून आपल्या कार्यकाळत गावकऱ्यांना शासनातर्फे मिळणारे धान्य अल्पदरात उपलब्ध करून देण्याकरिता प्रयत्नशील आहेत.

चेअरमन श्री आरदवाड यांना पुढील कार्यासाठी आर्य जनांतर्फे हार्दिक शुभेच्छा×

हैदराबाद मुक्ती संग्राम दिनानिमित्त-

संग्रामकालीन एक क्रांतिकारी गाव÷जानापुर'

- विजयकुमार जगताप

आजच्या कर्नाटक राज्यातील बिदर जिल्ह्यात बसवकल्याण तालुक्याच्या अगदी जवळ चार किलोमीटर अंतरावर जानापुर हे एक खेडे गाव आहे. गावची लोकसंख्या जवळ-जवळ २५०० आहे. हे संपूर्ण गांव मराठी भाषिक व आर्य समाजी आहे. इ.स.१९३४ साली आर्य समाजाची स्थापना भाई बन्सीलाल, भाई श्यामलाल व पंडित नरेंद्रजी यांच्या प्रेरणेने गावचे मालीपाटील श्री बाबाराव गोविंदराव पाटील यांनी केली. त्या काळी दक्षिण भारतात ७वे निजाम मीर उस्मान अली खान यांचे राज्य होते. तेंव्हा आर्य समाज स्थापन करण्यास बंदी होती. तरीही निजाम सरकारला न जुमानता आर्य समाजाची स्थापना करून येथे युवक सम्राट पंडित नरेंद्रजींच्या नावाने ÷नरेंद्र निकेतन आश्रम शिक्षण संस्था' ही चालू करण्यात आली. आर्य प्रतिनिधी सभा, हैदराबाद यांच्या वतीने ही शिक्षण संस्था कार्य करीत होती. शिक्षणाचे माध्यम हिंदी होते. हिंदी प्रचार सभा सुलतान बाजार हैदराबादच्या वतीने परीक्षा घेतल्या जात होत्या. त्यावेळी बिदर जिल्ह्यात ही एकमेव शिक्षण संस्था होती. त्यावेळी उर्दू भाषा सरकार दरबारी होती. सरकार इतर भाषेत शिक्षण घेण्यास परवानगी देत नव्हते आणि धार्मिक स्वातंत्र्य व नागरी अधिकार हिंदू लोकांना मिळत नव्हते.

आर्य समाज जानापूरचे पहिले प्रधान श्री संभाजीराव जगताप, मंत्री झेटींगराव जगताप, कोषाध्यक्ष श्री नामदेवराव रावजीबा आणि इतर ९ जण सदस्य होते. बसवकल्याणचे गोपाळदेव शास्त्री व्यवस्थापक, श्री निवृत्तीराव आणि श्री नागोराव हे दोघेही पत्नीसह शिक्षक म्हणून नियुक्त होते. श्री अनंत शर्मा ही शिक्षक म्हणून कार्य करीत होते. गावातील लोकांनी ६ शिक्षकांना राहण्याची उत्तम सोय करून दिली. विद्यार्थ्यांच्याही निवास व भोजनाची मोफत व्यवस्था केली होती. जवळ-जवळ १५० विद्यार्थी आजुबाजूच्या खेड्यातील शिक्षण घेत होते. त्या वेळेस **÷नरेंद्र निकेतन'** मध्ये दररोज सकाळी व संध्याकाळी यज्ञ आणि वैदिक संध्या पुरोहित पं.गोपाळदेव शास्त्री हे करून घेत असत. पुरोहित कडून केली जात असे. विद्यार्थ्यांना शारीरिक शिक्षणासाठी आखाड्याची सुद्धा सोय होती. गावात पिठाची गिरणी नव्हती. गावातील स्त्रिया व पुरुष जात्यावर दळण दळून भाकरी करून विद्यार्थ्यांना वेळेवर जेवण देत होते. गाव लहान असले तरी सधन होते. गावात मोठ्या मनाची माणसे होती आणि गावात एकोपा होता.

इ.स.१९२१ साली मीर उस्मान खान

७ वे निजाम यांनी एक फर्मान काढून आर्य समाज व हिंदूंच्या सार्वजनिक सभा, सम्मेलने, प्रवचन, मिरवणूक, हवन कुंडांची स्थापना, यज्ञशाळा यांवर बंदी घातली होती. मंत्रीमंडळाची परवानगी घेतल्याशिवाय सभा घेणे, व्यायामशाळा, खाजगी शाळा, ग्रंथालय इत्यादी सरकारच्या परवानगीशिवाय काढू नयेत, अशी सक्ती केली होती आणि जो कोणी या आदेशाचा भंग करील, त्याला शिक्षा देण्याची कायद्यात तरतूद करण्यात आली होती. हे आदेश ÷गस्ती निशान ५२-५३' या नावाने ओळखले जात. ही सर्व बंधने आर्य समाज व हिंदू जनतेवर लादली होती. इ.स.१८८५ साली लावण्यात आलेली धार्मिक बंधने इ.स.१९११ साली मीर उस्मान अली खानने आणखीनच कठोर केली. मुसलमानांच्या मशीदीपुढे वाद्य वाजवत मिरवणूक काढण्यास कडक बंधने होती. मोहरम च्या दिवसात दसरा वगैरे हिंदूंचे सण आल्यास त्या काळात कोणतेही वाद्य न वाजवता व गाणी न म्हणता सण साजरे करावेत, असे कडक निर्बंध लादण्यात आले होते. निजाम सरकारने १२ एप्रिल १९३४ रोजी एक परिपत्रक प्रसिद्ध केले. त्यात पूर्व परवानगी शिवाय आर्य समाजामध्ये कोणत्याही प्रकारचा प्रचार किंवा उपदेश करता येणार नाही, असे जाहिर करण्यात आले होते. अशा गंभीर परिस्थितीत आर्य समाज जानापुरची स्थापना झाली. तसेच २३ जानेवारी व २९ एप्रिल रोजी पुन्हा परिपत्रक काढून आर्य समाजाच्या मंदिराबाहेरही हवन, सार्वजनिक सभा घेण्यास प्रतिबंध करण्यात आला.

हैद्राबाद राज्याच्या बाहेरील आर्य उपदेशक, प्रचारक, वक्ते, आंदोलक, सत्याग्रही यांना निजाम राज्यात येण्याची बंदी होती. हैद्राबाद संस्थानात ८५ टक्के लोक हिंदू असून सुद्धा शासक उस्मान अली खान यांचे होते. सरकारच्या धार्मिक विभागाकडून हिंदूची आर्थिक पिळवणूक होत होती. सरकार शेतसारा(तहसील), कर, लेखी इत्यादींपासून सरकारी खजान्यात जमा झालेला पैसा सरकार फक्त इंग्रज सरकारला खंडणी देणे व मुसलमान धर्मावर खर्च करीत असत. मशिदी बांधण्यावर जास्त पैसा खर्च होत असे. निजाम सरकार पंडित नरेंद्रजींना परिस्थिती पाहून जेलमध्ये डांबत होते. त्यांचे बरेच जीवन जेलमध्ये गेले.

इ.स.१९४३ साली गुलबर्गा येथे आयोजित चौथ्या आर्य सम्मेलनामध्ये पोलिसांकडून मोठा दंगा करण्यात आला. या दंग्यामध्ये आर्य समाजाचे नेते विनायकरावजी विद्यालंकार, गणपत शास्त्री, पं.नरेंद्रजी आणि सभेचे कारकून हिरालाल यांना पोलिसांकडून लाठीमार करण्यात आला. पं.नरेंद्रजींच्या पायाचे हाड तोडण्यात आले. या सम्मेलनासाठी गेलेले हुमनाबाद, बिदर, बसवकल्याण, जानापुर, घोरवाडी, निरगुडी या गावच्या लोकांची संख्या जास्त होती. गुलबर्गा शहरात कर्फ्यु होता. लोक वाट

मिळेल तिकडे पोलीसांचा मार खात शहराच्या बाहेर पळत होते.

बहादूर यार जंगची मजलिस संघटना, काशीम रजवींची रजाकार संघटना, पस्ताकोम, गुंड मुसलमान, खाकसार संघटना, निजामी पोलिस आणि अधिकारी यांच्याकडून अत्याचार, जाळपोळ, लुटालूट, बलात्कार, हत्या, धर्मांतरण, छळ, हिंदू लोकांवर बिदर जिल्ह्यात जास्त प्रमाणात होत होते. याच स्वातंत्र्य पूर्व काळात इ.स.१९४६ मध्ये जानापूर येथे पहिले विशाल आर्य सम्मेलन झाले. या सम्मेलनाला पं.नरेंद्रजी, पं.विनायकराव विद्यालंकार, बंसीलालजी, पं.ज्ञानेंद्रजी, भजनोपदेशक पं.नरदेवजी, शेषरावजी वाघमारे उपस्थित होते. संमेलनाला जानापुर गावच्या परिसरातील ७-८ गावचे १५००-२००० स्त्रिया व पुरुष उपस्थित होते. निजाम सरकारचे पोलिस संमेलनाच्या पूर्वीपासून जानापुर येथे कँप करून होते. या सम्मेलनाचा रिपोर्ट त्यांनी सरकारला अगोदरच पाठविला होता. संमेलनाला सरकारकडून परवानगी घेण्यात आलेली नव्हती. पं.नरेंद्रजींना सरकार घाबरत होते. कारण प्रचंड हिंदू जनसमुदाय त्यांच्या पाठीशी होता. जानापुरचे हे पहिले संमेलन(उत्सव) म्हणून आजही प्रसिद्ध आहे. पं.नरेंद्रजी आपल्या भाषणात घोषणा केली की, ÷हैद्राबाद स्टेट ८२६९८ हजार चौ.मैलाचा एक विशाल जेलखाना आहे. कत्तलखाना आहे. आम्हाला धर्म, जाती, संस्कृतीचे रक्षण केले पाहिजे. सरकारच्या होणाऱ्या अत्याचाराच्या विरोधात कठोर कार्य केले पाहिजे.' त्यानंतर जानापुर येथे दुसरे आर्य संमेलन १९५१ साली झाले. प.नरेंद्रजी, प्रकाशवीर शास्त्री, पं.बंसीलालजी, पं.नरदेवजी, बस्वकल्याणचे पं.गोपाळदेव शास्त्री, शेषरावजी वाघमारे, पं.विनायकरावजी यांची उपस्थिती होती.

आणखी एक प्रसंग येथे नमूद करावासा वाटतो की, ज्येष्ठ अमावस्या शके १८६० दि.२७ जून १९३८ रोजी रात्री ८ वा. बसवकल्याण येथे धर्मप्रकाश हा आर्य युवक मारला गेला. आर्य समाज बसवकल्याणचे ÷ओ३म्' ध्वज उतरविले. ते फाडण्यात आले. या कारणाने बसवकल्याणचे आर्य समाज चालू शकला नाही. संघर्ष वाढू नये म्हणून आर्य प्र.सभा हैद्राबादच्या सूचनेवरून बसवकल्याणचा आर्य समाज हा जवळच्या जानापुर गावी दोन वर्षांसाठी हलविण्यात आला.

(या लेखाचा उत्तरार्ध आगामी अंकात...)

- मंत्री, आर्य समाज जानापूर
ता.बसवकल्याण जि.बीदर (कर्नाटक)

ज्यांच्या पावन बलिदानाने

हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम

यशस्वी ठरला, अशा ज्ञात-अज्ञात सर्व आर्य बलिदानी, शूरवीर क्रांतिकारकांना व स्वातंत्र्यवीरांना

शतश: अभिवादन×

औरंगाबादेतील कन्या शिबिरात ९५ मुलींचा सहभाग

औरंगाबाद शहरापासून अलिप्त अशा एकांतस्थळी इंग्लीश विद्यालयाच्या इमारतीत आयोजित आर्य कन्या संस्कार शिबिरांमुळे आर्य कार्यकर्त्यांचा व पालकांचा उत्साह द्विगुणीत झाला आहे. या शिबिरात जवळपास ९५ मुलींनी सहभागी होऊन आसन, प्राणायाम, लाठी-काठी, ज्युडो कराटे, विविध क्रीडा तसेच आत्मसुरक्षेसाठी आवश्यक असणाऱ्या इतर बलसंवर्धक बाबींचे प्रशिक्षण घेतले.

दि.२ ते ९ मे २०१८ दरम्यान आयोजित या शिबिरात सर्वश्री माधवराव देशपांडे (सभामंत्री), सौ.नलिनी देशपांडे, विज्ञानमुनिजी, डॉ.नयनकुमार आचार्य, डॉ.यज्ञवीरजी कवडे, पं.रमेश ठाकूर, संयोजक प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, बालाजी नरवडे, प्रा.विनय चिद्री आदी मान्यवरांनी विविध विषयांवर मुलींना मार्गदर्शन केले. पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी पूर्णवेळ उपस्थित राहुन संध्या व यज्ञाची बाजू सांभाळली व भजने सादर केली. शिबिराचे उद्‌घाटन शहराचे अतिरिक्त पोलीस अधिक्षक एन.एस. कोडे यांच्या हस्ते ध्वजारोहनाने झाले. यावेळी त्यांनी मुलींना सशक्त व आत्मनिर्भर बनण्याच्या आवश्यकतेवर भर दिला. याप्रसंगी निवृत्त पोलीस निरीक्षक श्री खुशहालचंद्र बाहेती, शिबराचे प्रमुख प्रशिक्षक श्री धर्मवीर आर्य, प्रधान श्री ठाकुर, मत्री सौ.अंजू माने, सौ.तोष्णीवाल, संयोजक डॉ.लक्ष्मण माने, डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं.प्रतापसिंह चौहान आदी उपस्थित होते.

तर शिबिराचा समारोप औरंगाबादच्या पोलीस कमिशनर ज्योती आडे, मानसोपचार तज्ज्ञ डॉ.संजीव सावजी यांच्या प्रमुख उपस्थितीत संपन्न झाला. यावेळी आर्य वीरांगणांनी या शिबिरात आचार्य धर्मवीर, कु.साक्षी, कु.सृष्टी, कु.दिशा यांच्याकडून घेतलेल्या शारीरिक व बौद्धिक बळाचे उत्तम प्रदर्शन केले.

लातूरचे कन्या संस्कार शिबिर यशस्वी

कार्यकर्त्यांची अपार मेहनत, उत्कृष्ट नियोजन आणि प्रशिक्षक विद्वानांचे मार्गदर्शन या आधारे कमी वेळ असतांना देखील प्रयत्नांची शिकस्त केल्याने लातूर येथे आर्यकन्या संस्कार शिबिर यशस्वी ठरले. दि.१३ मे ते १९ मे दरम्यान प्रांतीय सभेच्या सहकार्याने आर्यसमाज, रामनगर लातूरच्या वतीने या कन्या संस्कार शिबिरात जवळपास ३५ मुलींनी सहभाग घेतला. माजी आ.शिवाजीराव पाटील कव्हेकर यांच्या सहकार्याने (ते अध्यक्ष असलेल्या) विवेकानंद इंटिग्रेशन इंग्लीश स्कूल संकुलात

हे शिबिर उत्साही वातावरणात पार पडले. प्रशिक्षक श्री धर्मवीर आर्य यांच्या प्रमुख मार्गदर्शनाखाली कु.सरिता व कु.भूमि आर्या यांनी विद्यार्थीनींना योगासन, प्राणायम, सर्वांगसुंदर व्यायाम, लाठी-काठी, विविध क्रीडा व आत्मसंरक्षणाचे प्रशिक्षण दिले. प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी संध्या, यज्ञ, बौद्धिक मार्गदर्शन केले तर भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी विविध प्रेरक व उद्‌बोधक भजने सादर केली. शिबिर काळात अतिथि विद्वान सर्वश्री पं.सुधाकरजी शास्त्री, सभामंत्री माधवराव देशपांडे, प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे, संयोजक प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, वैद्य विज्ञानमुनिजी, सौ.ज्योतिताई व श्री वैजनाथराव हालिंगे आदींनी विविध विषयांवर मार्गदर्शन केले. आर्यवीर दल अधिष्ठाता व्यंकटेश हालिंगे व सभेचे उपप्रधान राजेंद्र दिवे, रामेश्वर राऊत, प्रधान शंकरराव मोरे, अनंत लोखंडे आदींनी शिबिराच्या सफलतेकरिता विशेष परिश्रम घेतले. विशेष म्हणजे लातूर नवजीवन पॅथॉलॉजीचे संचालक श्री दत्तात्रय अपसिंगेकर यांनी आपल्या संस्थेतर्फे सर्व शिबिरार्थिनींचे मोफत रक्तगट तपासणी व इतर रक्तचाचण्या करून सामाजिक सेवेचा आदर्श प्रस्थापित केला आहे. या शिबिराचा समारोप डी.ए.वी. बिहारचे निवृत्त प्राचार्य डॉ.नीलकंठ विद्यालंकार यांच्या प्रमुख उपस्थितीत पार पडला. प्रारंभी व्यायाम व योगासनांचे चित्ताकर्षक प्रदर्शन झाले. यावेळी प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी व इतरांनी ही मार्गदर्शन केले.

भोसले व अडाप्पा कुटुंबियांना सहाय्यता निधीचे वितरण

वेदप्रसार कार्याबरोबरच समाजातील असहाय्य गरजू व होतकरू अशा घटकांना हातभार लावण्याच्या उद्देश्याने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा सातत्याने प्रयत्नशील असते. लंडन येथील सामाजिक आर्य कार्यकर्त्यां दिवंगत शांतिदेवी मायर यांनी सभेत स्थापन केलेल्या स्थिरनिधींच्या व्याजाच्या रक्कमेतून हे परोपकाराचे कार्य केले जाते. यात विधवा महिला सहाय्यता निधी व विद्यार्थी सहाय्यता निधी या दोन उपक्रमांचा समावेश आहे. आर्य समाजाशी संलग्न असलेल्या विधवा महिलांना व गरीब होतकरु विद्यार्थ्यांना या योजेनत समाविष्ट करून घेतले जाते. यांची शिफारस त्या-त्या परिसरातील आर्य समाजांकडून होणे गरजेचे आहे. यावर्षी लातूरातील दोन विधवा महिलांची व त्यांच्या मुला-मुलींची(विद्यार्थ्यांची) या मदत योजनेसाठी निवड करण्यात आली व हे धनादेश सभेतर्फे लातूरातील आर्य समाज रामनगर येथे दि.६ जून रोजी वितरीत करण्यात आले. सभेचे उपप्रधान राजेंद्र दिवे, अंतरंग

सदस्य, शंकरराव मोरे, प्रतिष्ठित सदस्य ज्ञानकुमार आर्य, आर्य समाजाचे मंत्री कुलदीप लोखंडे, डॉ.नयनकुमार आचार्य, रामेश्वर राऊत, पं.नारायण आर्य यांच्या प्रमुख उपस्थितीत या सर्व मान्यवरांच्या शुभहस्ते खालीलप्रमाणे देण्यात आला.

विधवा महिला सहाय्यता निधीतून श्रीमती मनीषा वीरभद्र अडाप्पा व श्रीमती विजया ओमप्रकाश भोसले यांना प्रत्येकी रू.२००० प्रदान करण्यात आले. तर विद्यार्थी सहाय्यता निधी पुढीलप्रमाणे-
१)कु.मयुरी विरभद्र अडाप्पा-रू.२०००,
२)कु.किरण वीरभद्र अडाप्पा-रू.२०००,
३)किरण वीरभद्र अडाप्पारू.२०००,
४)वैभव वीरभद्र अडाप्पारू.२०००,
५)चि.करण वीरभद्र अडाप्पारू.२०००,
६)आदित्य ओमप्रकाश भोसले रू.२०००
यावेळी मान्यवरांनी या दोन्ही कुटुंबियांना आर्य समाजांच्या सान्निध्यात येऊन वैदिक विचारांचे अनुयायी बनण्याचे आवाहन केले.

प्रकल्प अधिकारी दत्ता मुळे सेवानिवृत्त

वैदिक विचारांचे अनुयायी श्री दत्ता मुळे हे महाराष्ट्र उद्योजकता विकास केंद्रा(एम.सी.ई.डी.)च्या प्रकल्प अधिकारी पदावरून नुकतेच सेवानिवृत्त झाले. शेवटच्या काळात ते औरंगाबाद येथे कार्यरत होते. यानिमित्त केंद्रातर्फे त्यांना दि.४ जुलै रोजी एका विशेष समारंभात भावपूर्ण निरोप देण्यात आला.

उद्योजकता केंद्राचे कार्यकारी संचालक श्री बी.एस.जोशी यांच्या अध्यक्षतेखाली औरंगाबाद रेल्वे स्टेशनलगतच्या उद्योजकता केंद्र सभागृहात पार पडलेल्या या निरोप समारंभात विविध उच्चपदस्थ अधिकारी, मित्रवर्ग, आर्य कार्यकर्ते व स्नेहीजण उपस्थित होते. सत्काराला उत्तर देतांना श्री मुळे यांनी आपण आर्य समाजामुळेच निर्व्यसनी, कर्तव्यदक्ष, प्रामाणिक राहुन कार्य करु शकलो, असे उद्‌गार काढले.

श्री दत्ता मुळे हे विद्यार्थीदशेत असतांना १९७९ साली निलंगा येथे पू.हरिश्चंद्र गुरुजी (स्वामी श्रद्धानंदजी) यांच्या संपर्कात आले. अनेक ठिकाणच्या मानवता संस्कार शिबिरात त्यांनी भाग घेतला. यामुळे ते वैदिक विचारांचे पक्के अनुयायी बनले. गुरुजींच्या प्रेरणेने त्यांचा आंतरजातीय विवाह झाला. पुढे ते आर्यसमाजाशी जोडले गेले. निवृत्तीनंतरच्या काळात आता ते आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यात वेळ देतील अशी अपेक्षा व शुभेच्छा...×

आर्य पुरोहितांनी प्रतिष्ठा जपावी- पं.राजवीर शास्त्री

÷पुरोहित ही राष्ट्र व समाजाची महान शक्ती आहे. राजापेक्षाही पुरोहित हा एकेकाळी मोठा होता, किंबहुना तो राज्यकर्त्यांचा मार्गदर्शक होता. यास्तव आर्य पुरोहितांनी स्वत:चे महत्व ओळखून स्वत:ची विशेष ओळख व आपली प्रतिष्ठा जपावी,' असे आवाहन वैदिक विद्वान पं.राजवीर शास्त्री यांनी केले.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने दि.२८ जून ते ८ जुलै दरम्यान आयोजित राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिराचा समारोप नुकताच झाला. त्यावेळी नवपुरोहितांना मार्गदर्शन करतांना ते बोलत होते. अध्यक्षस्थानी सभेचे कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर होते. यावेळी श्रद्धानंद गुरुकुलाचे आचार्य श्री सत्येंद्रजी प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते.

श्री शास्त्री यांनी यावेळी विशुद्ध पद्धतीने १६ संस्कार व विविध कर्मकांडाच्या विधी तर्कसंगत व विज्ञाननिष्ठ पद्धतीने प्रतिपादित करणाऱ्या आर्य समाजी पुरोहितांची प्रकर्षाने गरज असल्याचे नमूद केले. अध्यक्ष श्री राठौर यांनी प्रशिक्षित नव पुरोहितांकडून समाजाचे प्रबोधन व्हावे, अशी अपेक्षा व्यक्त केली. यावेळी सर्वश्री शंकर आर्य (मुंबई), विमलेश आर्य (आळंदी), प्रा.यादव भांगे (नांदेड), सौ.नंदा मुलगीर या शिबिरार्थ्यांनी मनोगत व्यक्त केले. या शिबिरात १८ ते २० पुरोहितांनी भाग घेतला. प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी प्रास्ताविक व संचलन केले, तर प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी आभार मानले.

÷सत्यार्थ प्रकाश' आता व्हॉट्सप वर...

पुणे येथील उत्साही व आर्य कार्यकर्त्यांच्या प्रयत्नांमुळे युगप्रवर्तक महर्षी दयानंद विरचित ÷सत्यार्थप्रकाश' या (मराठी) अजरामर ग्रंथाचे ध्वनिमुद्रण प्रसारण सध्या ÷व्हॉट्सअप' समूहावर होत आहे. याकरिता विविध भाग करण्यात आले असून त्या-त्या भागाचे प्रायोजकत्व स्वीकारणे आवश्यक आहे. पं.सातवलेकरांनी अनुवादित केलेल्या ग्रंथाचे अभिवाचन गीता चारुदत्त उपासनी या करीत असून आजपर्यंत १० ते १२ भागांचे प्रसारण झाले आहे. इच्छुकांनी ÷युगप्रवर्तक महर्षि दयानंद(मराठी)' या व्हाट्सप समूहाशी संलग्न व्हावे, तसेच प्रायोकत्व स्वीकारून आर्थिक सहकार्य करावे, असे आवाहन महाराष्ट्र आर्य सभेचे माजी मंत्री माधवराव देशपांडे (मो.९८२२२९५५४५) व अमेरिकेत कार्यरत असलेले आर्ययुवक श्री रणजित चंदावले यांनी केले आहे.

महासंमेलनात सहभागी व्हा - ॲड.प्रकाश आर्य

येत्या २५ ते २८ ऑक्टोबर २०१८ दरम्यान दिल्ली येथे भव्य स्वरूपात आयोजित ÷आंतरराष्ट्रीय आर्य महासंमेलना'त महाराष्ट्रातील आर्य बंधु-भगिनींनी बहुसंख्येने सहभागी व्हावे, असे आवाहन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री ॲड.प्रकाश आर्य यांनी केले. महासंमेलनाची रूपरेषा, माहिती व आयोजनाची तयारी याविषयी मराठी आर्य कार्यकर्त्यांशी विचारविनिमय करण्यासाठी व प्रामुख्याने सर्वांना आमंत्रित करण्यासाठी श्री प्रकाश आर्य औरंगाबादेत आले होते. प्रारंभी महाराष्ट्र आर्य प्रा.सभा व आर्य समाज संभाजीनगर(औरंगाबाद) तर्फे श्री आर्य यांचा फेटा बांधून सत्कार करण्यात आला. महाराष्ट्रातील आर्य कार्यकर्त्यांनी मोठ्या संख्येने सहभागी व्हावे', असे आवाहन त्यांनी केले. शेवटी श्री दयाराम बसैये यांनी आभार मानले.

आर्य सभेतर्फे योगदिन साजरा

आंतरराष्ट्रीय योग दिनाचे औचित्य साधून महाराष्ट्र सभा व आर्य समाज लातूरच्या संयुक्त विद्यमाने दि.२१ जून रोजी लातूरातील विविध शाळांमध्ये योग शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते. आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे यांच्या नेतृत्वाखाली लातूरातील यशवंत विद्यालय व इतर शाळांमध्ये विद्यार्थ्यांना विविध आसने, प्राणायाम आणि ध्यानाचे प्रशिक्षण देण्यात आले.त्यांच्या समवेत ॲड.विजयकुमार सलगरे व इतरांनी योगाचे प्रशिक्षण दिले.

औरंगाबाद येथे पर्जन्यवृष्टी महायज्ञ संपन्न

भरपूर पाऊस होऊन जीवसृष्टी सुखी व्हावी, या उद्देशाने आर्यसमाज औरंगाबाद (संभाजीनगर) च्या वतीने दि.२७ जून ते १ जुलै दरम्यान औरंगाबादपासून जवळच असलेल्या गांधेली गावात ÷वैदिक पर्जन्यवृष्टी महायज्ञ' संपन्न झाला. प्रसिद्ध वृष्टिविशेषयज्ञ डॉ.कमलनारायण आर्य व इतर साधुसंतांच्या प्रमुख उपस्थितीत हा यज्ञ अतिशय उत्साहात पार पडला. दररोज सकाळ संध्याकाळ वैदिक मंत्र उद्घोषात यजमानांनी सश्रद्ध आहुत्या प्रदान केल्या. शहर व गावातील प्रतिष्ठीत कार्यकर्ते, महिला-पुरुष आणि गावकरी या यज्ञात सहभागी झाले होते.

हा यज्ञ यशस्वी करण्यासाठी प्रधान जुगलकिशोर दायमा, मंत्री दयाराम बसैये, कोषाध्यक्ष ॲड.जोगेंद्रसिंह चौहान यांच्यासह इतर पदाधिकाऱ्यांनी प्रयत्न केले.

-० शोकवार्ता ०-

स्वा.सै.हिरामणजी डोईजोडे दिवंगत

प्रांतीय सभेचे अंतरंग सदस्य, आर्य समाज, औराद (शहा.) चे वयोवृद्ध कार्यकर्ते आणि हिंदी सत्याग्रहात सहभागी समाजसेवी व्यक्तिमत्त्व श्री हिरामणजी डोईजोडे(अण्णा) यांचे दि.२५ जुलै २०१८ रोजी पहाटे दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९६ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी, दोन मुले, कन्या, जावई, नातू-नाती, पणतू आदी परिवार आहे.

श्री डोईजोडे अण्णा हे औराद (शहा.) परिसरातील एकनिष्ठ आर्य समाजी व्यक्तिमत्त्व× स्थानिक आर्य समाजाच्या बांधकाम व वेदप्रचार कार्यात त्यांचा सिंहाचा वाटा होता. केरोसीन डीलरशीप व अन्य व्यापारकार्य असूनही त्यांनी आर्य समाजाच्या कार्यात मोलाची भूमिका बजावली. ५ ते ६ वेळा मानवता संस्कार शिबिरे आयोजित केली. श्री डॉ.प्रकाश कच्छवा व इतर सहकाऱ्यांना सोबत घेऊन त्यांनी या परिसरात आर्य समाजाचा नावलौकिक वाढविला. सभेतर्फे आयोजित ठिकठिकाणच्या भाषण स्पर्धा व इतर शिबिरांना ते आपल्या वाहनाद्वारे विद्यार्थ्यांना घेऊन यायचे. विविध सभा संमेलने व बैठकांना अण्णांची उपस्थिती हमखास असायची× विशेष म्हणजे हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम काळात त्यांनी क्रांतिकारकांना सहकार्य केले. निलंग्याचे श्री शेषरावजी वाघमारे यांच्या नेतृत्वाखालील हिंदी सत्याग्रहात ते उत्साहाने सहभागी झाले होते.

अलीकडील ७ ते ८ वर्षापासून पक्षाघाताच्या आजारामुळे ते अंथरुणावरच होते. शेवटपर्यंत पत्नी व मुलांनी त्यांची सेवाशुश्रूषा केली. विशेष म्हणजे घरी आलेल्या विद्वान व अतिथींचा ते मनोभावे सत्कार करीत. दोन वर्षांपूर्वी लातूर येथील जाहीर समारंभात महाराष्ट्र सभेतर्फे त्यांचा ÷ज्येष्ठ आर्यसेवक' म्हणून गौरव करण्यात आला. दिवंगत श्री डोईजोडे अण्णाच्या पार्थिवावर दुपारी ४ वा. गावालगतच्या तेरणा नदीतीरावरील सार्वजनिक स्मशानभूमीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी सर्वश्री विश्वनाथरावजी वलांडे गुरुजी, डॉ.प्रकाश कच्छवा, गोविंदराव भिंगोले, डॉ.नयनकुमार आचार्य, वैद्य विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, विजयकुमार कानडे, विजय वाघमारे, पं.प्रतापसिंह चौहान, प्राचार्य शिवाजीराव जाधव, राजेंद्र दिवे आदींनी श्रद्धांजली वाहिली. **दिवंगत श्री डोईजोडे यांना सभा व आर्य समाजाच्या वतीने भावपूर्ण श्रद्धांजली×**

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

श्रेष्ठ मानव बनों ×

वेदों की ओर लौटो !

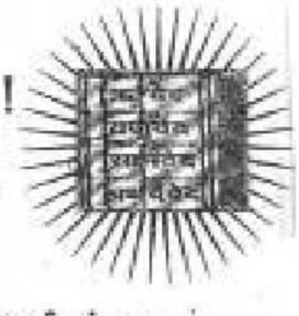

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.८/टी.इ. (७)९८७/१०४१,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

गुरुकुल में उपनयन संस्कार

श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली में नवप्रविष्ठ ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार कराते हुए आचार्य सत्येन्द्रजी एवं पं.राजवीरजी शास्त्री।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सभा की ओर से लातूर में आयोजित योगशिविर में प्रशिक्षण देते हुए श्री व्यंकटेशजी हालिंगे।

औरंगाबाद में आयोजित प्रजन्यवृष्टि यज्ञ की पुर्णाहुति पर आहुतियाँ प्रदान करते हुए आर्य कार्यकर्त्ता, वैदिक विद्वान व संतजन×

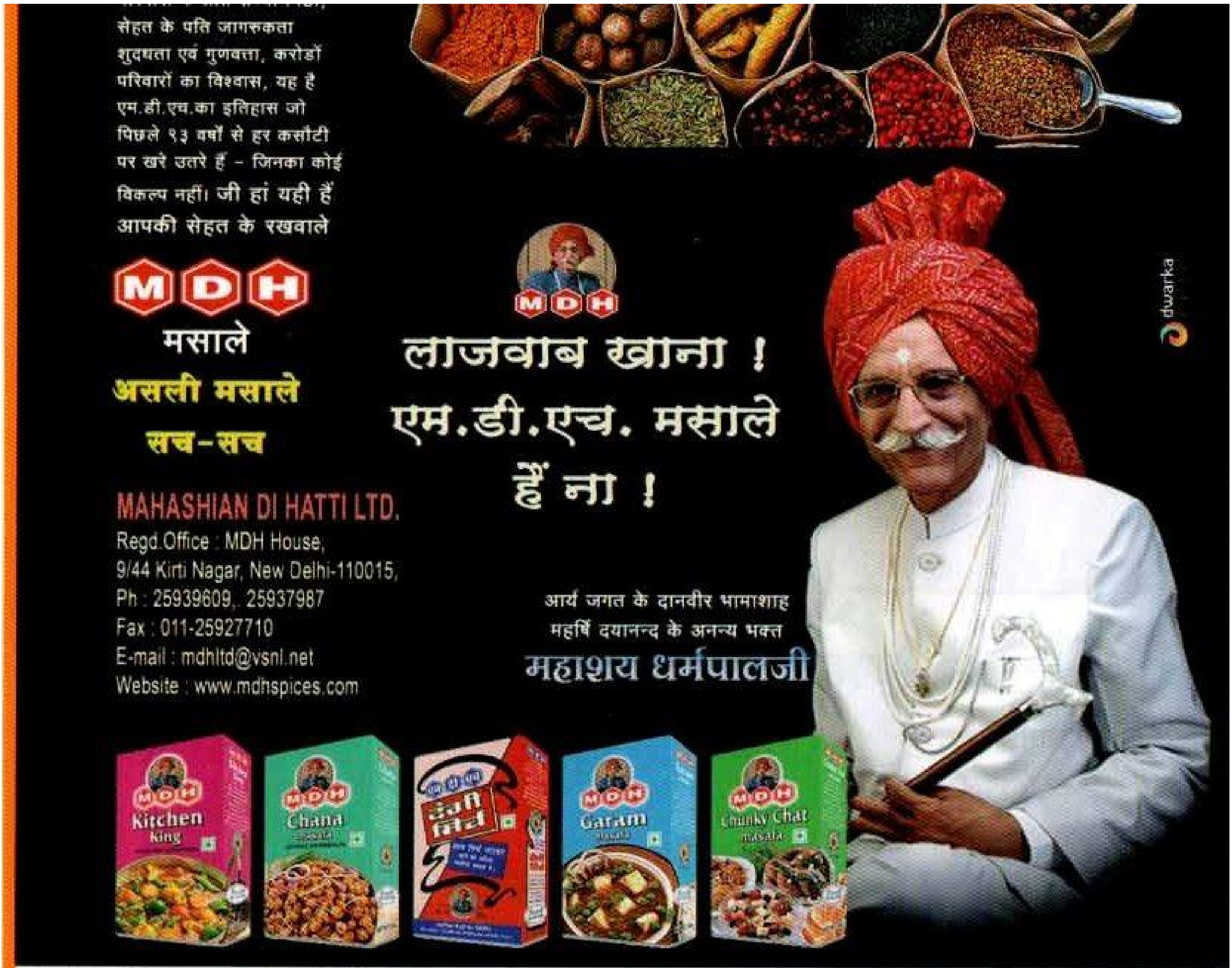

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली–वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! ॥ ओ३म् ॥ जीवेत् शरदः शतम् !

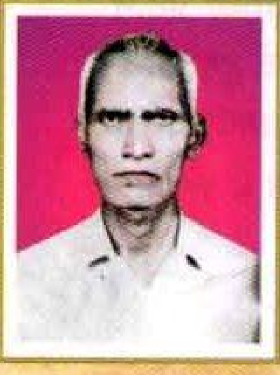

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट